Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता

B.H.D.C.-113

B.A. Hindi (Hons.) - 6th Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Dr. Rajessh Kumar*

NEERAJ
PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1

Sample Question Paper—1 (Solved) 1

Sample Question Paper—2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. साहित्यिक पत्रकारिता एवं सांस्कृतिक पत्रकारिता : अवधारणा और महत्त्व 1

2. हिंदी की साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रदेय 9

3. हिंदी की साहित्यिक पत्रिकाओं का सांस्कृतिक प्रदेय 18

4. प्रेमचंद युगीन साहित्यिक पत्रकारिता 24

5. भारतेंदु युगीन साहित्यिक पत्रकारिता 30

6. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता 35

7. समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता 44

8. साहित्यिक पत्रकारिता में अनुवाद की भूमिका 53

9. हिंदी पत्रिकाओं का स्वरूप-विकास 63

10. 'बनारस अखबार' एवं 'भारत मित्र' की साहित्यिक पत्रकारिता 69

11. 'हिन्दोस्थान' एवं 'प्रदीप' की साहित्यिक पत्रकारिता 78

12. 'आज' एवं 'स्वदेश' की साहित्यिक पत्रकारिता 88

13. 'प्रताप' एवं 'कर्मवीर' की साहित्यिक पत्रकारिता 94

14. 'विशाल भारत' एवं 'जनसत्ता' की साहित्यिक पत्रकारिता 105

15. 'सरस्वती' एवं 'नागरी प्रचारिणी' पत्रिका 110

16. 'दिनमान' एवं साप्ताहिक 'हिंदुस्तान' की साहित्यिक पत्रकारिता 115

17. 'धर्मयुग' की साहित्यिक पत्रकारिता 121

18. 'हंस', 'तद्भव' एवं 'पहल' की साहित्यिक पत्रकारिता 127

19. 'साक्षात्कार' की साहित्यिक पत्रकारिता 133

20. हिंदी की शोध साहित्यिक पत्रकारिता 142

21. 'चांद' एवं 'सारिका' की साहित्यिक पत्रकारिता 148

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता

B.H.D.C.-113

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (ii)* ***प्रथम*** *प्रश्न अनिवार्य है।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) प्रताप अखबार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-94, 'प्रताप की जीवन-यात्रा और तत्कालीन परिवेश'

(ख) भारत मित्र

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-74, प्रश्न 2, पृष्ठ-75, प्रश्न 3

(ग) साक्षात्कार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-133, 'साक्षात्कार पत्रिका का उद्‌भव एवं विकास'

(घ) नागरी प्रचारिणी पत्रिका

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-110, 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका का उद्‌भव एवं विकास'

प्रश्न 2. हिंदी की साहित्यिक पत्रिकाओं के सांस्कृतिक प्रदेय को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-18, 'सांस्कृतिक प्रदेय के विविध स्वरूप', 'सांस्कृतिक प्रदेय का महत्त्व', 'सांस्कृतिक प्रदेय के प्रमुख स्तंभ', 'सांस्कृतिक प्रदेय के प्रमुख आयाम', पृष्ठ-19, 'सांस्कृतिक प्रदेय की प्रासंगिकता'

प्रश्न 3. भारतेन्दु युगीन साहित्यिक पत्रकारिता के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-32, प्रश्न 2, पृष्ठ-33, प्रश्न 3 एवं प्रश्न 4

प्रश्न 4. स्वातंत्र्योत्तर साहित्यिक पत्रकारिता के विविध रूपों को लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-36, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता', पृष्ठ-38, प्रश्न 3

प्रश्न 5. समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता से क्या आशय है? इसके महत्त्व को प्रतिपादित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-44, 'परिचय', 'समकालीन साहित्यिक पत्रिका का कालखंड', पृष्ठ-45, 'समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता का महत्त्व'

प्रश्न 6. साहित्यिक पत्रकारिता में अनुवाद के विविध आयामों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-56, 'साहित्यिक पत्रकारिता में अनुवाद के विविध आयाम'

प्रश्न 7. 'बनारस अखबार' के साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-69, 'बनारस अखबार का परिचय एवं पृष्ठभूमि', 'बनारस अखबार की पत्रकारिता और भाषा-शैली'

प्रश्न 8. स्वदेश की साहित्यक पत्रकारिता की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-89, 'स्वदेश का महत्त्व एवं प्रासंगिकता', पृष्ठ-90, प्रश्न 3

इसे भी देखें–राष्ट्रीय चेतना की अलख जगाने में 'स्वदेश' समाचार पत्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इस पत्र ने अपने संपादकीय आलेखों, निबंधों, कविताओं, कहानियों के द्वारा स्वाधीनता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया और जनता को जागरूक कर एक सही दिशा देने का प्रयत्न किया। इस पत्र की विशेषताओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं साहित्य का विकास हुआ। इस समाचार पत्र ने तत्कालीन साहित्यकारों की रचनाओं को स्थान दिया। इस दृष्टि से आचार्य रामचंद्र शुक्ल का प्रसिद्ध निबंध 'क्षात्र धर्म का सौंदर्य' सबसे पहले स्वदेश में 9 अक्टूबर, 1921 को प्रकाशित हुआ। इस पत्र का मूल स्वर राजनीति था, लेकिन इसके बावजूद साहित्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। 'स्वदेश' पत्र इस तरह के साहित्य का समर्थक था, जो देश और समाज का हित करने वाला हो। इस पत्र ने स्वाधीनता आंदोलन में अपनी कविताओं के द्वारा 'स्वदेश' में छपने वाले रचनाकारों ने जनसामान्य को जागरूक करने का कार्य किया और इसके साथ ही हिंदी साहित्य को भी विकसित किया। इस पत्र में प्रकाशित होने वाली कहानी, कविता, नाटक, निबंध, आलोचना आदि साहित्य की विभिन्न विधाएं 'स्वदेश' में निरंतर प्रकाशित होती रहीं, जिनके द्वारा हिंदी साहित्य का सर्वांगीण विकास हुआ। वर्तमान समय में भी 'स्वेदश' जैसे महत्त्वपूर्ण समाचार पत्रों की जरूरत है, ताकि समाज एवं साहित्य और संस्कृति को संरक्षण मिल सके। अत: कहा जा सकता है कि इन दोनों समाचार पत्रों का समाज में महत्त्व आज भी प्रासंगिक है।

प्रश्न 9. 'धर्मयुग' पत्रिका का सामाजिक-सांस्कृतिक महत्त्व बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-124, प्रश्न 1 ■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता

B.H.D.C.-113

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्रकारिता का आशय बताते हुए इसके स्वरूप और विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'साहित्यिक पत्रकारिता का स्वरूप-विकास', पृष्ठ-3, प्रश्न 5

प्रश्न 2. राष्ट्रीय आन्दोलन के क्षेत्र में साहित्यिक पत्रकारिताओं के प्रदेय को सविस्तार समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-12, 'हिंदी की साहित्यिक पत्रिकाओं का सारांश'

प्रश्न 3. सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में प्रेमचंद युगीन साहित्यिक पत्रकारिता के योगदान को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-24, 'प्रेमचंद युगीन साहित्यक पत्रकारिता का महत्त्व', पृष्ठ-25, 'प्रेमचंद युगीन साहित्यिक पत्रकारिता की प्रासंगिकता'

प्रश्न 4. समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता के विविध रूपों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-46, 'समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता के विविध आयाम'

प्रश्न 5. साहित्यिक पत्रकारिता के विकास में अनूदित साहित्य की भूमिका तथा महत्त्व बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-55, 'साहित्यिक पत्रिका में अनुवाद का महत्त्व', पृष्ठ-56, 'साहित्यिक पत्रकारिता में अनुवाद की प्रासंगिकता'

प्रश्न 6. 'हिंदोस्थान' की साहित्यिक पत्रकारिता की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-78, 'हिंदोस्थान' की साहित्यिक पत्रकारिता की प्रासंगिकता'

प्रश्न 7. 'प्रताप' एवं 'कर्मवीर' के प्रदेय को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-97, 'प्रताप एवं कर्मवीर का प्रदेय', पृष्ठ-103, प्रश्न 15

प्रश्न 8. आधुनिक हिंदी साहित्य के विकास में 'सरस्वती' पत्रिका के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-110, 'सरस्वती का उद्‌भव एवं विकास', पृष्ठ-111, 'साहित्य निर्माण में योगदान' पृष्ठ-112, 'साहित्य की विविध विधाओं का समावेश'

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) विशाल भारत

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-105, 'विशाल भारत का परिचय एवं पृष्ठभूमि', 'विशाल भारत की साहित्यक पत्रकारिता और भाषा-शैली'

(ख) स्वदेश

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-90, प्रश्न 3

(ग) हंस

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-127, 'हंस का परिचय और पृष्ठभूमि'

(घ) चाँद

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-21, पृष्ठ-148, 'चाँद का उद्‌भव एवं विकास'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता

साहित्यिक पत्रकारिता एवं सांस्कृतिक पत्रकारिता : अवधारणा और महत्त्व

1

परिचय

हिंदी भाषा में पत्रकारिता की शुरुआत लगभग दो सौ वर्ष पूर्व हो चुकी थी। हिंदी भाषा का पहला सप्ताहिक समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड' पंडित जुगलकिशोर के संपादन में कलकता से प्रकाशित हुआ। हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता को वर्तमान में प्रकाशन के स्तर पर चार भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. संस्थाओं द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं के अंतर्गत 'हिंदुस्तानी', 'सम्मेलन पत्रिका', 'माध्यम' आदि।
2. उद्योगपतियों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं के अंतर्गत– 'आलोचना', 'दिनमान', 'कादंबिनी' आदि।
3. सरकारी पत्रिकाओं के अंतर्गत–गगनांचल, योजना, आजकल आदि।
4. व्यक्ति विशेष के माध्यम से प्रकाशित लघु पत्रिकाओं के अंतर्गत–'प्रतीक', 'कथा', 'मतवाला' आदि।

इसी प्रकार संचार माध्यमों द्वारा प्रकाशित साहित्यिक पत्रिकाओं के अंतर्गत–रेडियो पत्रकारिता, टीवी पत्रकारिता आदि सम्मिलित हैं। इन पत्रिकाओं के माध्यम से विविध प्रकार के साहित्यिक आंदोलनों की शुरुआत हुई और अनेक विचारधाराएं उभरकर सामने आईं।

अध्याय का विहंगावलोकन

साहित्यिक पत्रकारिता का स्वरूप-विकास

साहित्यिक पत्रकारिता से अभिप्राय–विविध रचनाकारों के सृजनात्मक और वैचारिक लेखन पत्र-पत्रिकाओं में समयबद्ध प्रकाशन से होता है। साहित्यिक पत्रिकाओं को मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक, चतुर्मासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक और नियतकालिक के रूप में प्रकाशित किया जा सकता है। प्रत्येक साहित्यिक पत्रिका में एक संपादन मंडल होता है, जिसके माध्यम से रचनाओं का चयन करके उन्हें यथास्थान एवं यथासमय प्रकाशित किया जाता है। इन पत्रिकाओं को नियमित रूप से पाठकों तक पहुंचाया जाता है और पाठकों के द्वारा प्रतिक्रियाएं भी प्राप्त होती रहती हैं। प्राचीन काल की पत्रिकाओं में अपने नाम के साथ कुछ मोटो भी प्रकाशित होते थे, जैसे–'प्रभा' का मोटो था–'प्रभावपूर्ण हो जाए प्राची दिशा'। इसी प्रकार अन्य पत्रिकाओं के भी अपने-अपने मोटो होते थे। साहित्यिक पत्रकारिता के अंतर्गत विचारात्मकता को प्रमुख महत्त्व दिया जाता है, जिसके कारण इनमें विवादास्पद लेखन एवं पॉलीमिक्स में वृद्धि होती है, जैसे–रूपवाद, समसमायिकता, परंपरा आदि से जुड़े बिन्दु लगातार विचाराधीन रहते हैं। भिन्न-भिन्न विधाओं के आधार पर भी साहित्यिक पत्रकारिता विभाजित रहती है, जैसे–काव्य पत्रकारिता के अंतर्गत कविता, गीत, नवगीत गजल की प्राथमिकताएं रहती हैं और इसी तरह 'सुकवि', 'रसिक वाटिका' आदि पत्रिकाओं में तुकांत कविताएं प्रकाशित होती थीं, परंतु अब कविताओं को फीडर के आधार पर प्रकाशित किया जाने लगा है। पहले की पत्रिकाओं में कथा-कहानी आधारित पत्रिकाओं में जासूसी कथाएं प्रकाशित होती थीं, फिर धीरे-धीरे उनमें उपन्यास, धारावाहिक आदि का प्रकाशन होने लगा। शुरुआती साहित्यिक पत्रकारिता के अंतर्गत अनुवाद को विशेष रूप से प्रकाशित किया जाता था, परंतु वर्तमान में मौलिक रचना से अधिक प्रकाशित होती हैं और वर्तमान समय में आधुनिक तकनीकी के कारण वेब पत्रकारिता में भी वृद्धि हुई है। साहित्यिक पत्रकारिता का भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

वर्तमान स्थिति

वर्तमान समय में हिंदी साहित्य की पत्रकारिता संकट के दौर से गुजर रही है। साहित्यिक पत्रिका में पाठकों के पढ़ने का ग्राफ भी दिन-प्रतिदिन कम होता जा रहा है, जिसके कारण अनेक पत्रिकाएं, जैसे–सरस्वती, माधुरी, कल्पना, धर्मयुग सप्ताहिक हिंदुस्तान, दिनमान, सारिका आदि बंद हो चुकी हैं और सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि औद्योगिक घरानों द्वारा चलाई जाने वाली पत्रिकाएं भी बंद हो चुकी हैं, क्योंकि इनसे होने वाला लाभ अन्य उद्योगों की अपेक्षा बहुत कम हो गया है और सामान्य जनता पर भी उनका प्रभाव न के बराबर हो चुका है। इस स्थिति के तक पहुंचने के अनेक कारण हैं–

1. साहित्यिक पत्रिकाएं गुटबाजी होने के कारण एक निश्चित विचारधारा को लेकर चलती हैं, जिसके कारण पाठक वर्ग के लिए अरुचिकर हो चुकी हैं।
2. पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली सामग्री पाठक के अनुकूल नहीं होती है। वर्तमान समय में संपादक गुणवत्ता का ध्यान नहीं रख रहे हैं, जिसके कारण साहित्यिक पत्रिका की प्रस्तुति खराब हो चुकी है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

3. पाठक के पढ़ने की वृत्ति रोजमर्रा का हिस्सा नहीं रह गई, जिसका प्रभाव पत्रिका के ग्राहकों के ऊपर पड़ा।
4 संकीर्ण विचारधारा के कारण लघु पत्रिका ने साहित्य को अरुचिकर बना दिया।
5. पूंजीवादी पत्रकारिता ने साहित्य के स्वरूप को विकृत कर दिया।

इसके अतिरिक्त और भी कारण हैं, परंतु अब पत्रिका के अस्तित्व को बचाने के अनेक उपाय हो सकते हैं, जैसे–

1. पत्रकारिता को उच्च शिक्षण संस्थानों में स्थान दिया जाए और पत्रकारों की पात्रता तय कर उन्हें मान्यता दी जाए।
2. साहित्यिक विचार गोष्ठियों, पुरस्कारों, अनुदान, थोक बिक्री, विज्ञापन आदि कार्यक्रमों में पत्रकारों को प्रोत्साहन दिया जाए।
3. साहित्यिक कार्यशालाओं के माध्यम से साहित्य संपादन का प्रशिक्षण अनिवार्य किया जाए।
4. सरकार द्वारा कम लागत की पत्रिकाओं का प्रकाशन एवं वितरण किया जाए।
5. पाठकवर्ग की रुचि के अनुकूल साहित्य का प्रकाशन किया जाए।

विविध रूप

हिंदी की साहित्यिक पत्रिका अनेक पड़ाव से होकर गुजरी है। इसका इतिहास लगभग 170 वर्ष पुराना है। इसी बीच इसके अनेक विधापरक रूप उभरकर सामने आए, जैसे–

1. अवधिपरक पत्रिका के अनेक रूप होते हैं, जैसे–पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक और वार्षिक।
2. भाषा के आधार पर द्विभाषी, त्रिभाषा और बहुभाषी हो सकती है।
3. साहित्यिक पत्रिका के दो रूप होते हैं, जैसे–लघु पत्रिका और वृहद पत्रकारिता।
4. साहित्यिक पत्रिका के प्रकाशन के आधार पर इसे चार भागों में विभक्त किया जा सकता है, जैसे–सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रकाशित, स्वायत्त संस्थाओं द्वारा प्रकाशन, सहकारिता के आधार पर प्रकाशन, व्यक्ति विशेष के माध्यम से प्रकाशन।
5. विषय-वस्तु के आधार पर इसके दो भेद हो सकते हैं– साहित्यपरक और अंशत: साहित्यिक पत्रिका।
6 विधापरक आधार पर इसके पांच भेद होते हैं, जैसे– कवितापरक, नाटक केंद्रित, कहानीपरक, शोध समीक्षापरक, मिश्रित विधा आदि।

साहित्यिक पत्रिकाओं के माध्यम से समाज और साहित्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है, जैसे–दूरदराज ग्रामीण क्षेत्रों में छिपी प्रतिभाओं को उभारा है और इस दृष्टि से चिरगांव झांसी के युवा कवि मैथिलीशरण गुप्त जैसी प्रतिभा को खोजने में और उन्हें राष्ट्रकवि के पद तक पहुंचाने का श्रेय 'सरस्वती' पत्रिका को जाता है। साहित्यिक पत्रिकाओं के माध्यम से अनेक विधाओं की स्थापना हुई है।

सीमाएं

वर्तमान समय में साहित्यिक पत्रिकाएं अनेक समस्याओं से जूझ रही हैं। इनकी सबसे बड़ी समस्या इनकी बिक्री और पठनीयता से संबंधित है। एक समय ऐसा था जब लोग 'मतवाला' के प्रकाशन के दिन प्रेस को घेर लेते थे, ताकि उन्हें अंक मिल सके और सरस्वती 'पत्रिका' के करोड़ों की संख्या में हिंदीभाषी लोग पाठक हुआ करते थे। इसी तरह 'माधुरी' पत्रिका लगभग 75 वर्षों तक ग्राहकों के बल पर निरंतर चलती रही, क्योंकि प्रेमचंद, रूपनारायण पांडे एवं कृष्ण बिहारी मिश्र ने इनके संपादन में बेजोड़ परिश्रम किया था। प्रेमचंद ने समाज से जुड़ी महत्त्वपूर्ण कहानियां रची और पांडे जी ने विविध भारतीय भाषाओं के अनुवाद छाप कर इसे पूर्णता प्रदान की। मिश्र जी ने कई ज्ञानपरक लेख प्रकाशित करके इसे विश्व ज्ञानकोश बना दिया। 'माधुरी' पत्रिका के अंक इसका प्रमाण है।

साहित्यिक पत्रिका के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि वह पाठक की रुचि के अनुसार प्रकाशित हो और जनसामान्य से संवाद करके रुचिकर शैली में अपनी प्रस्तुति करें बार-बार अपने रूप को सुसज्जित करें और अपने निजी संसाधनों का विकास करें। आज के युग की सरकारी पत्रिकाएं मानदेय देती है, इसलिए दोयम दर्जे के रचनाकारों से घिरी रहती हैं और स्वायत्तशासी पत्रिकाएं सीमित दृष्टिकोण को लेकर चलती हैं। इसी तरह व्यक्तिगत पत्रिकाएं अपने स्वार्थ और प्रोपेगेंडा को केंद्र में रखकर चलती हैं। साहित्यिक पत्रिकाओं के मुद्रण, प्रकाशन, संशोधन, प्रूफ पठन बड़ी मेहनत का कार्य होता है। हर छपने वाली रचना में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी इतने संशोधन लगाते थे कि मूल से ज्यादा रचना उनकी ही लिखित हो जाती थी। वे रचना के एक-एक शब्द पर ध्यान देते थे और उन्हें उसे अवगत भी करवाते थे। हजारीप्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती' पत्रिका का लगभग 20 वर्षों तक उन्होंने संपादन किया, जिसमें एक दिन का भी उन्होंने विलंब नहीं किया, हमेशा छह अंकों की पहली तैयारी करके चलते थे, धीरे-धीरे साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रति सरकार भी उदासीन हो गई और इनको वहन करने का खर्च भी महंगा हो गया। थोड़ा-बहुत समय पूंजीवादी घरेलू पत्रिकाओं ने अपनी ओर आकर्षित कर लिया और यही साहित्यिक पत्रिका की दुर्दशा के मूल कारण थे।

समाधान

साहित्यिक पत्रिकाओं के समाधान असंभव प्रतीत होते हैं। अगर साहित्यिक पत्रिका को कम मूल्य में सर्वांगीण सामग्री से युक्त रुचिकर एवं विचारोत्तेजक रचनाओं का प्रकाशन किया जाए एवं पाठक शिविर, प्रदर्शनी, संगोष्ठी के माध्यम से नई विपणन नीति के आधार पर उनका प्रचार-प्रसार किया जाए, तो सहकारी प्रकाशनों के माध्यम से नियमित छपी पत्रिकाओं की बिक्री में वृद्धि संभव हो सकती है। इस संदर्भ में सरकार को भी नियमों में ढील बरतनी होगी, जिसमें सस्ते कागज, कम डाक व्यय और अनुदान के लिए सत्याग्रह के सहारे मनाया जा सकता है। साहित्यिक पत्रिकाओं को स्व वित्तपोषित करना आवश्यक हो गया है। फुटकर अंकों के स्थान पर आकर्षक उपयोगी विशेषांकों का प्रकाशन अधिक जनप्रिय सिद्ध होगा। अगर पूरे पाठक समाज को ध्यान में रखकर लक्ष्य निर्धारित किया जाए, तो साहित्यिक पत्रकारिता अवश्य अपना स्थान बनाने में कामयाब होगी।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. इनमें प्रथम श्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका कौन थी?
(क) सरस्वती (महावीर प्रसाद द्विवेदी)
(ख) हंस (प्रेमचंद)
(ग) माधुरी (रूपानारायण पाण्डेय)
(घ) चांद (रामरिख सहगल)
उत्तर–(क) सरस्वती (महावीर प्रसाद द्विवेदी)।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रश्न 2. 'हिंदी नयी चाल में ढली' यह कथन किस पत्रिका में कब प्रकाशित हुआ था?

(क) बनारस अखबार (1878)
(ख) हिंदी प्रदीप (1870)
(ग) हरिश्चन्द्र मैग्जीन (1873)
(घ) भारत मित्र (1880)

उत्तर–(ग) हरिश्चन्द्र मैग्जीन (1873)।

प्रश्न 3. हिंदी पुस्तक समीक्षा किस पत्रिका से शुरू हुई?

(क) हिन्दी बंगदूत (ख) सुधाकर
(ग) समालोचक (घ) आनंद कादंबिनी

उत्तर–(घ) आनंद कादंबिनी।

प्रश्न 4. लघु पत्रिका किसे कहते हैं?

(क) जिसका आकार लघु होता है
(ख) जिसकी पृष्ठ संख्या बहुत कम हो
(ग) जिसमें लघु कहानी, लघु कविताएं ही छपती हों
(घ) जिसका प्रसारण कम ग्राहकों में हो रहा हो

उत्तर–(घ) जिसका प्रसारण कम ग्राहकों में हो रहा हो।

प्रश्न 5. साहित्यिक पत्रकारिता का स्वरूप-विकास समझाइए।

उत्तर–पत्रकारिता के इतिहास में साहित्यिक पत्रकारिता का हमेशा से विशिष्ट स्थान रहा है। साहित्यिक पत्रकारिता एक ऐसा माध्यम है, जिसके जरिए साहित्य की विभिन्न विधाओं को विशेष प्रयोजन के साथ अभिव्यक्ति दी जाती है। ये विधाएँ आलोचना, काव्य, कथा-साहित्य, नाट्य, निबंध, संस्मरण, साक्षात्कार, समीक्षा, समकालीन साहित्य विमर्श, तुलनात्मक साहित्य, साहित्य-संस्कृति, आदि पर केंद्रित होती हैं। इन विधाओं को पत्र-पत्रिकाओं (मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक, अर्धवार्षिक) के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। साहित्यिक पत्रकारिता का यह चरित्र ही उसके और शुद्ध पत्रकारिता के बीच विभाजन रेखा की भूमिका निभाता है। इसके अतिरिक्त साहित्यिक पत्रकारिता मूलत: एक प्रकार से आदर्शवादी व सृजनात्मक होती है और स्वयं को बाजार की शक्तियों के संचालन एवं आक्रमण से सुरक्षित भी रखने की कोशिश करती है।

यह भी सच है कि साहित्यिक पत्रकारिता स्वयं के वस्तु में रूपांतरण का भी प्रतिरोध करती है। साहित्यिक हिंदी पत्रकारिता का इतिहास न केवल समृद्ध है, बल्कि समय के सापेक्ष उपजने वाले विमर्शों में यह अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। टेक्नोलोजी के अत्यधिक विकास और प्रयोग के बावजूद मुद्रित माध्यमों की महत्ता तनिक भी कम नहीं हुई है, बल्कि यह मुद्रित होने के साथ-साथ इंटरनेट से जुड़े माध्यमों में प्रवेश कर चुकी है और साहित्यिक हिंदी पत्रकारिता को ग्लोबल प्रसिद्धि और प्रसार मिल रहा है।

प्रत्येक सामाजिक विमर्श में साहित्यिक हिंदी पत्रिकाओं की भूमिका और महत्त्व सदैव बना रहेगा। लोकतंत्र की स्थापना जरूर हुई, लेकिन वास्तविक अर्थों में लोकतंत्र का धीरे-धीरे क्षरण भी वहीं से शुरू होता है। शैक्षिक परिप्रेक्ष्य से साहित्यिक पत्रकारिता के वर्गीकरण कर सकते हैं, जैसे–

1. शुद्ध साहित्यिक,
2. आंशिक साहित्यिक,
3. लोकप्रिय व प्रतिष्ठानी साहित्यिक।

शुद्ध साहित्यिक पत्रकारिता एक प्रकार से व्यक्ति या साहित्यिक संस्था आधारित होती है। इसमें लाभ-अर्जन के स्थान पर कृति व विचार संप्रेषण प्रमुख उद्देश्य रहता है। इस पत्रकारिता में प्रतिबद्धता व संकल्पबद्धता के तत्व प्रमुख होते हैं। यह दैनंदिन पत्रकारिता के मानकों से निर्देशित नहीं होती है। साहित्यिक पत्रकारिता वैयक्तिक या समान विचारधर्मी समूह के संसाधनों पर आधारित होती है।

आंशिक साहित्यिक पत्रिकाओं की श्रेणी में उन पत्रिकाओं को रखा जा सकता है, जिसमें साहित्य एक भाग के रूप में उपस्थित होता है और उसमें समकालीन साहित्यिक विमर्शों और साहित्यिक विधाओं की नई रचनाओं को जगह दी जाती है।

लोकप्रिय और प्रतिष्ठानी साहित्यिक पत्रिकाओं की श्रेणी में वे पत्रिकाएँ आती हैं, जो बड़े घरानों और संस्थाओं से निकलती हैं, जिनके साथ पूंजी का कोई संकट नहीं होता। स्वाभाविक है कि भारत में हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता मुख्य रूप से पत्रिकाओं, लघु पत्रिकाओं के माध्यम से की जाती रही है। इन पत्रिकाओं को मोटे तौर निम्न तरीके से विभाजित किया जा सकता है–नियतकालीन और अनियतकालीन अर्थात पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक आदि।

साहित्यिक पत्रकारिता–इसके अंतर्गत साहित्यिक पत्रिका और गैर-साहित्यिक पत्रिका गिनी जाती हैं। साहित्यिक पत्रिका के अंतर्गत ऐसी पत्रिकाओं को वर्गीकृत किया जा सकता है, जिनका संपादन शुद्ध साहित्यकारों द्वारा किया गया। इस श्रेणी के अंतर्गत 'सरस्वती', 'चाँद', 'आलोचना', 'कल्पना', 'नई कहानी', 'अभिनव कदम', 'अक्षर पर्व', 'हंस' आदि को रखा जा सकता है। दूसरी श्रेणी में वे हैं, जिनका संपादन साहित्यकारों ने किया, लेकिन ये बड़े प्रकाशन समूह की पत्रिकाएँ थीं, जैसे–'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिंदुस्तान', 'ज्ञानोदय', 'कादंबिनी', 'वामा' आदि।

लघु पत्रिकाएँ–विचारपरक साहित्यिक पत्रिकाएँ, जैसे–'समयांतर', 'पहल', 'नया पथ', जिसमें साहित्य और विचार दोनों का समावेश होता है।

साहित्य और पत्रकारिता दोनों ही ज्ञान के व्यवस्थित संस्थान हैं और एक-दूसरे की अनिवार्यता साबित करने के लिए प्रतिबद्ध भी रहे हैं। साहित्यिक पत्रकारिता, पत्रकारिता में प्रतिरोधी चेतना के अभाव के कारण आ सकी। साहित्यिक पत्रकारिता का जन्म ही एक तरह से अपने में पत्रकारिता के मानक गुणों को समावेशित करने तथा प्रतिरोधी चेतना को जगाने के लिए हुआ है। यह एक ऐसी पत्रकारिता होती है, जिसमें साहित्य होता है और साहित्य में पत्रकारिता होती है। इसमें एक-दूसरे के विलीनीकरण का रूप सामने उपस्थित होता है। साहित्य और पत्रकारिता को एक-दूसरे से बहुत अलग भी नहीं किया जा सकता। दोनों के अवयव एक दूसरे में घुले-मिले हुए हैं। पत्रकारिता जहां हताश-निराश लोगों की आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए प्रतिरोधी विचारों का सृजन करती है और सरकारों को बात-बात पर चेतावनी देती रहती है, जिससे समाज में जागृति आती है और परिवर्तनकारी लहरों का फैलाव होता है, तो वहीं साहित्य भी इस शुचितापूर्ण जिम्मेदारी का निर्वहन करता है।

साहित्य भी पत्रकारिता की शैली में ही प्रतिरोध जगाने का काम करता है। आजादी के पूर्व की साहित्यिक पत्रकारिता आज भी हमारे लिए मानक बनी हुई है। अच्युतानंद मिश्र जी साहित्यिक हिंदी पत्रकारिता के इतिहास का मूल्यांकन करते हुए लिखते हैं, ''गत साठ वर्षों की हिंदी पत्रकारिता की मूलात्मा साहित्यिक-सांस्कृतिक ही रही है, जो उसके उद्भव से लेकर अब तक विद्यमान है। व्यापक जनाकांक्षा और जन संघर्षों को लेकर चलने वाली यह पत्रकारिता

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

आज इस मायने में भी आश्वस्त देती है कि भूमंडलीय और बाजार के वैश्विक हमलों के बावजूद इसकी प्रतिरोधी क्षमता और सांस्कृतिक चेतना की उग्रता में कोई कमी नहीं आई है। हिंदी जिस तरह वंचित जन की वाणी है, उसके संघर्षों की अभिव्यक्ति है।''

साहित्यिक पत्रकारिता एक नई सामाजिक-आर्थिक तथा राजनीतिक प्रति संसार बनाने को प्रतिबद्ध एक आंदोलन है, जिसमें समानता, समता, स्वत्व तथा आत्मनिर्भरता के आदर्शों की शक्ति है। हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता जैसी विविधता अन्यत्र नहीं है। सामान्यत: सामंती काल और औद्योगिक काल मे साहित्य को पत्रकारिता की जननी माना जाता रहा है, क्योंकि इन समाजों में ये दोनों विधाएँ इतनी मुखरित रूप से विभाजित नहीं थीं जितनी आज दिखाई देती हैं। इसका प्रमुख कारण सामंती और औद्योगिक कालों मे सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक और तकनीकी शक्तियों की विकास अवस्था है, लेकिन जैसे-जैसे औद्योगिक क्रांति का विस्तार होता गया, पूंजीवादी व्यवस्था का वर्चस्व बढ़ने लगा, नए बाजार व नए उपभोक्ता वर्ग उभरने लगे, लोकतांत्रिक गतिविधियों व संस्थाओं का विस्फोट होने लगा, संचार के नए माध्यमों (विशेष रूप से प्रिंट) की जरूरत महसूस होने लगी।

इस पृष्ठभूमि में साहित्य और पत्रकारिता के पारंपरिक संबंधों का पुनर्निर्धारण भी होने लगा। मूलत: साहित्य मनुष्य की कोमल व सृजनात्मक अभिव्यक्ति का एक दीर्घजीवी माध्यम होता है, जबकि पत्रकारिता उसकी तात्कालिक, त्वरित और लक्षित अभिव्यक्ति का माध्यम होता है। साहित्य में समय के तीनों काल समाहित रहते हैं और अपनी निर्धारित भूमिका निभाते हैं। इसके विपरीत पत्रकारिता वर्तमान से मुठभेड़ करती है और मनुष्य की दैनंदिन गतिविधियों को एक संगठित रूप में वृहद स्तर पर संप्रेषित करती है। इस साहित्यिक पत्रकारिता ने लोकतांत्रिक व जनतांत्रिक जन-आंदोलनों को सूक्ष्म व वृहद स्तरों पर एक आकार देने में भूमिका निभाई। इस संदर्भ में चार्ल्स डिकेंस, चार्ल्स लेम, मैक्सिम गोर्की, लू-शुन, भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, माखनलाल चतुर्वेदी, निराला, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे अनेक नाम हैं, जिन्होंने साहित्य-सृजन के साथ-साथ पत्रकारीय उत्तरदायित्वों का भी वहन किया—साप्ताहिक, दैनिक, मासिक पत्र-पत्रिकाएँ निकालीं, तात्कालिक मुद्दों पर सृजनात्मक शैली में अपने विचार रखे तथा पत्रकारिता को रचनात्मकता से समृद्ध किया। यह परंपरा आधुनिक काल में भी अनवरत रूप से जारी है।

प्रश्न 6. पाठ का सारांश लिखिए।

उत्तर—साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्रकारिता भी विशेषज्ञ पत्रकारिता के क्षेत्र हैं। सांस्कृतिक पत्रकारिता तो हमेशा से ही मुख्य दौर की पत्रकारिता से जुड़ी है और शुरुआती अखबारों में भी सांस्कृतिक समाचारों के लिए अलग कोना होता था। प्राय: सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में आज भी सांस्कृतिक समाचार, जानकारियों अथवा सूचनाओं के लिए अलग पृष्ठ अथवा स्तम्भ जरूर होता है। दैनिक समाचार पत्रों में सांस्कृतिक संवाददाता जैसा पद भी काफी पुराना है, जबकि आज के दौर में सांस्कृतिक समाचारों के कवरेज में प्राय: गम्भीरता नहीं दिखाई देती, लेकिन रंगीन पृष्ठों की पत्रकारिता के कारण अखबारों के तीसरे अथवा चौथे-पांचवें पृष्ठ पर सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़े चित्रों का प्रकाशन जरूर होता है।

अगर यह मान लें कि आज संस्कृति के अर्थ बदल रहे हैं, तो यह भी कहा जा सकता है कि नये जमाने की नई संस्कृति में पेज थ्री, मॉल कल्चर, थीम पार्टी या स्टार नाइट आदि नए-नए नामों के साथ सांस्कृतिक पत्रकारिता ने भी अपना चोला बदल लिया है और वह नए जमाने की रफ्तार से कदम मिलाने लगी है।

साहित्यिक पत्रकारिता का क्षेत्र भी विशेषज्ञ पत्रकारिता का क्षेत्र है। भारत में साहित्य सृजन की परम्परा आदि कवि वाल्मीकि से शुरू मानी जाती है। श्रुत परम्परा यानी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सुन-सुन कर आगे बढ़े ज्ञान को ताम्र पत्र, भोज पत्र, और अन्य हस्तलिखित ग्रन्थों ने सुरक्षित किया, तो छापेखाने के इस्तेमाल के बाद साहित्य का मुद्रित रूप सामने आने लगा। पत्रकारिता के विकास के साथ साहित्य भी समाचार पत्रों का हिस्सा बनने लगे, लेकिन साहित्य का क्षेत्र इतना विशाल था कि सामान्य पत्रकारिता के साथ उसकी निभ नहीं पाई और साहित्य ने अपने लिए पत्रकारिता की एक अलग विधा ही विकसित कर ली।

साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं के जन्म के साथ ही साहित्यिक पत्रकारिता की विकास यात्रा शुरू हुई। आजादी से पहले 'चांद', 'हंस', 'मतवाला' जैसी पत्रिकाओं ने तो आजादी के बाद 'नवनीत', 'कादम्बिनी', 'सारिका' आदि से लेकर 'समकालीन भारतीय साहित्य', 'पहल', 'ज्ञानोदय' आदि अनेक साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं ने समाज को जागरूक बनाने और आदर्श जीवन मूल्यों की रचना में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। आज भी देश में हजारों अनियतकालीन साहित्यिक पत्रिकाएं छप रही हैं। एक सीमित दायरे में होने के बावजूद इन पत्रिकाओं का अपना महत्त्व है और इनमें छपे शब्दों का अपना असर भी है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. साहित्यिक पत्रिका में विभिन्न पत्रकारों की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—दक्षिणी अमेरिका के विश्वविख्यात उपन्यासकार मार्खेज मूलत: एक सक्रिय पत्रकार भी रहे हैं। इसी संदर्भ में भारत में भी अनेक ऐसी विभूतियाँ हैं, जिनमें साहित्य और पत्रकारिता का संगम दिखाई देगा। हिंदी मे उत्तर औपनिवेशिक काल अर्थात स्वातंत्र्योत्तर भारत मे साहित्यिक पत्रकारों के प्रमुख हस्ताक्षरों में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', धर्मवीर भारती, रघुवीर सहाय, मनोहर श्याम जोशी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, श्रीकांत वर्मा, रामानंद दोषी, कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव, ज्ञानरंजन, विद्यानिवास मिश्र, कमला प्रसाद, रवींद्र कालिया, उदय प्रकाश, कन्हैयालाल, गुलशेर अहमद शानी, असगर वजाहत, रमेश उपाध्याय, राजकिशोर, पंकज बिष्ट, विष्णु नागर, प्रभु जोशी, अरुण प्रकाश, रमणिका गुप्ता जैसे नामों को शामिल किया जा सकता है। इसी प्रकार ऐसे भी पत्रकार रहे हैं, जिनकी अभिव्यक्ति, भाषा-शैली और प्रस्तुतीकरण ने पत्रकारिता की सीमाओं को लांघा, उसे साहित्यिक स्पृश्यता से समृद्ध किया और सृजनात्मक क्षेत्र में अपनी पैठ भी बनाई। इस संदर्भ में प्रभाष जोशी, राजेंद्र माथुर, राहुल बारपुते, मायाराम सुरजन, गणेश मंत्री, ललित सुरजन, आलोक श्रीवास्तव, शरद दत्त, यशवंत व्यास, मधुसूदन आनंद, हरिवंश आदि के नामों का उल्लेख किया जा सकता है, जिनकी पत्रकारिता में साहित्य की उपस्थिति की झलक कम या अधिक देखी जा सकती है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com